सूक्तिसौरभम्

तृतीयपुष्पम्

उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्रों के लिए

© NCERT not to be republished

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

पुरोवाक्

प्रस्तुत पुस्तकमाला "सूक्ति सौरभम्" (तीन खण्डों में) राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद् के पूर्वत: सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग की लघुपुस्तकमाला योजना के अन्तर्गत तथा सम्प्रति भाषा विभाग के तत्त्वावधान में कक्षा 6-8, 9-10 तथा 11-12 के छात्रों के लिए पूरक पुस्तक के रूप में लिखी गई है। इसमें जीवनोपयोगी उन कालजयी सूक्तियों को संकलित किया गया है जो संस्कृत छात्रों के अतिरिक्त सामान्य संस्कृत जिज्ञासुओं के जीवन का मार्ग प्रशस्त करती हैं। एं सूक्तियाँ जितनी प्राचीन हैं उतनी ही नवीन हैं। इनके द्वारा छात्रों में मूल्य शिक्षा को देने का प्रयास किया गया है। इनमें आये विचार NCF 2005 की रूपरेखा के अनुरूप हैं। पुस्तकों में सूक्तियों के सरल हिन्दी तथा अंग्रेजी अनुवाद देकर छात्रों की कठिनाई का निवारण भी कर दिया गया है ताकि छात्र सूक्तियों के भावों को आसानी से हृदयंगम कर सकें। प्रथम खण्ड में वे सूक्तियाँ रखी गयी है जो सरल तथा सुकुमारमति छात्रों की बुद्धि के अनुरूप मूल्यों की शिक्षा प्रदान कर सके। द्वितीय खण्ड में थोड़ी उच्चस्तरीय सूक्तियों का संकलन किया गया है। जिन्हें अंग्रेजी तथा हिन्दी में अर्था सहित प्रस्तुत किया गया है। तृतीय खण्ड में द्वितीय खण्ड से भी उच्चस्तरीय सूक्तियों को संकलित किया गया है। हिन्दी तथा अंग्रेजी अनुवाद छात्रों की सुविधा के लिए वहाँ भी दिए गए है। इस तरह तीन खण्डों में प्रस्तुत यह सूक्ति सौरभम् पुस्तक माला क्रमश: कक्षा 6-8, 9-10 तथा 11-12 के छात्रों के पूरक पुस्तक के रूप में विकसित की गई है।

सूक्ति सौरभम् के प्रथम खण्ड को प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यधिक प्रशन्नता का अनुभव हो रहा है। पूर्व में पाठ्यपुस्तकों के प्रकाशन की प्राथमिकता के कारण इस पुस्तक को नहीं छापा जा सका था। मुझे विश्वास है कि परिषद् के स्वर्णजयन्ती वर्ष में इस पुस्तक का प्रकाशन संस्कृत छात्रों तथा सामान्य संस्कृत जिज्ञासुओं के लिए अत्यधिक लाभकारी सिद्ध होगा।

इस पुस्तक के प्रणयन में सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग के पूर्व विभागाध्यक्षों सहित भाषा विभाग के अध्यक्ष का अनेकविध मार्गदर्शन रहा है। एतदर्थ पूर्वविभागाध्यक्षों सहित वर्तमान विभागाध्यक्ष हमारे साधुवाद के पात्र है। पुस्तक की सामग्री संकलन/पाण्डुलिपि निर्माणादि कार्यों में अनेकविध सहयोग के लिए श्रीमती उर्मिल खुङ्गर सहित भाषा विभाग के पूर्व संस्कृत आचार्य डॉ कमलाकान्त मिश्र तथा वर्तमान आचार्य डॉ. कृष्णचन्द्र त्रिपाठी तथा असिस्टैन्ट प्रोफेसर डॉ. रणजित बेहरा हमारे धन्यवाद के पात्र हैं।

पुस्तक की पाण्डुलिपि समीक्षा के लिए आयोजित गोष्ठियों में उपस्थित होकर जिन विषय विशेषज्ञों तथा अनुभवी संस्कृत अध्यापकों ने अपने बहुमूल्य सुझावों एवं परामर्श से सहयोग किया है, परिषद् उनके प्रति हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करती है।

पाठ्यक्रम तथा पाठ्यपुस्तक का निर्माण एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। अत: पुस्तक को अधिकाधिक उपयोगी बनाने हेतु विशेषज्ञों एवं अध्यापको के अनुभव पर आधारित परामर्शों का सहर्ष स्वागत किया जाएगा तथा संशोधित संस्करण तैयार करते समय उनका समुचित उपयोग किया जाएगा।

निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद्

नई दिल्ली

© NCERT not to be republished

भूमिका

संस्कृत विश्व की प्राचीनतम भाषा है जिसका विशाल साहित्य (वेद, वेदांग, उपनिषद्, पुराण, विविध शास्त्र, काव्य आदि) अनेक दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण है। यह उदात्त संस्कारों के साथ ही साथ शास्त्रीय ज्ञान तथा मौलिक चिन्तन का अगाध स्रोत भी है। इसमें विद्यमान सुभाषित भारतीय मनीषियों के ऐसे सुवचन हैं जो अनुभवों पर आधारित होने के कारण शाश्वत सत्य का उद्घाटन करते हैं तथा विषमता से युक्त इस जगत में संकटग्रस्त किंकर्तव्यविमूढ़ मनुष्यों का मार्गदर्शन करते हैं। लोक-कल्याण के लिए प्रयुक्त ये सूक्तियाँ जीवन की विसंगतियों को सहज एवं सरल रूप से सुलझाने का कार्य करती हैं। इनमें नीति, कर्तव्य, सत्य, व्यवहार, परिवार, समाज, राष्ट्र तथा विश्वबन्धुत्व सम्बन्धी अनेकानेक शाश्वत जीवनमूल्य विद्यमान हैं। जीवन के यथार्थ का दिग्दर्शन कराने वाली एवं नैतिक मूल्यों को मन-मस्तिष्क में आरूढ़ करने वाली इन सूक्तियों से लोकहित की सहज प्रेरणा मिलती है जिसकी सहायता से मनुष्य अपने जीवन में सत्यम्, शिवम् और सुन्दरम् की अलौकिक छवि प्रकट कर सकता है। भाषागत सरलता, भावों की सहजता तथा संवेदना की गहराई के साथ ही साथ अभिव्यक्ति की मनोरम शैली के कारण सूक्ति साहित्य निश्चय ही अतुलनीय है। उपनिषद्, रामायण, महाभारत, गीता के श्लोक या उनके अंश, हितोपदेश, पंचतंत्र, नीतिशतक, चाणक्यनीति, विदुरनीति, शुक्रनीति आदि ग्रन्थ इस दृष्टि से विशेष रूप से अवलोकनीय हैं।

शुभचिन्तक मित्र की तरह संस्कृत-सूक्तियाँ जन-मन का मार्गदर्शन करती हैं। ये जीवन में परिस्थिति-जनित समस्याओं का सद्यः समाधान सुझाकर मानव को सुख-शान्ति तथा सन्मार्ग की ओर अग्रसर होने की प्रेरणा प्रदान करती हैं। इनके लघु आकार में जन-मानस के लिए व्यावहारिक संदेश तथा शाश्वत जीवनदर्शन के संकेत 'गागर में सागर' की भाँति समाए हुए हैं। इनकी मधुरता की प्रशंसा में एक सूक्ति है-

'तस्माद्धि काव्यं मधुर तस्मादपि सुभाषितम्'

आज जबकि समाज में मानवीय-मूल्यों का ह्रास हो रहा है, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् इन मूल्यों को विकासोन्मुख छात्रों एवं जनसामान्य में विकसित करने हेतु कृत-संकल्प है, संस्कृत वाङ्मय से चयनित सूक्तियों का विशेष महत्त्व है। इसी उद्देश्य से पूरक पाठ्य-सामग्री के विकासक्रम में **संस्कृत लघु पुस्तकमाला योजना** के अन्तर्गत विभिन्न शास्त्रों से संकलित एवं छात्रों के बौद्धिक स्तर के अनुरूप सुसज्जित **सूक्तिसौरभम्** नामक एक सुभाषित संग्रह तीन खण्डों (तीन पुष्पों) में क्रमशः उच्च प्राथमिक, उच्च माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक छात्रों के लिए प्रस्तुत किया जा रहा है जिसका यह तृतीय खंड है।

प्रस्तुत **सूक्तिसौरभम्** सुकुमारमति विद्यालय-स्तरीय छात्रों में संस्कृत साहित्य के प्रति अभिरुचि उत्पन्न करने एवं उनमें नैतिक मूल्यों का विकास करने में उपादेय होगा। इस पुस्तक के निर्माण में जिन ग्रन्थों, ग्रन्थकारों एवं विद्वानों का सहयोग प्राप्त हुआ है, संपादक उनके प्रति हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करता है। पुस्तक के प्रकाशन में सहयोग के लिए विभाग के श्री रामप्रकाश शर्मा और डॉ. दयाशंकर तिवारी धन्यवाद के पात्र हैं।

© NCERT not to be republished

विषयानुक्रमणिका

भूमिका			**i-ii**
पुरोवाक्			
1.	आत्म-विश्वासः	विस्मयः सर्वथा हेयः	1
2.	आत्म सम्मानः	यज्जीव्यते क्षणमपि	2
		मनस्विनो न मन्यन्ते	3
3.	आध्यात्मिकता	ईशावास्यमिदं सर्वं	4
4.	उत्तमजनः	घृष्टं घृष्टं पुनरपि	5
5.	उत्साहः	विजेतव्या लंका चरणतरणीयो	6
6.	उदारता	भुक्तं स्वादुफलं कृतं च	7
7.	उद्यमः	काष्ठादग्निर्जायते	9
8.	कर्तव्यपरायणता	कुर्वन्नेवेह कर्माणि	10
9.	कार्य-दक्षता	गुणवद्गुणवद् वा कुर्वता	11
10.	कुसंगति-परित्यागः	मन्दोऽप्यमन्दतामेति	12
11.	क्षमा	यः समुत्पतितं क्रोधं	13
12.	चतुरता	व्रजन्ति ते मूढधियः	14
13.	जागरूकता	उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्	15
14.	तेजस्विता	अबन्ध्यकोपस्य विहन्तुरापदां	16
15.	दूरदर्शिता	ऋणशेषं चाग्निशेषं	17
16.	दृढ़-संकल्पः	प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन	18
17.	धैर्यम्	त्याज्यं न धैर्यं विधुरेऽपि	19
		कदर्थितस्यापि च धैर्यवृत्तेः	20
18.	परोपकारः	एके सत्पुरुषाः परार्थघटकाः	21
		अहो एषां वरं जन्म	22
		पत्र-पुष्प-फलच्छाया-मूल	23
19.	प्रियवादिता	आकोपितोऽपि कुलजो	24
20.	मद्य-निषेधः	धृतिं लज्जां च बुद्धिं च	25
21.	मनस्विता	को वीरस्य मनस्विनः स्वविषयः	26
22.	महापुरुषः	तृणानि नोन्मूलयति प्रभंजनो	27
23.	मातृभूमिः	यस्यां वृक्षा वानस्पत्या	28
		यस्यां समुद्र उत सिन्धुरापो	29
24.	मित्रता	आरम्भगुर्वी क्षयिणी क्रमेण	30
		परोऽपि हितवान् बन्धुः	31
25.	लोभ-परित्यागः	आदाने कुरुते बुद्धिं	32
26.	लोकप्रियता	आशाया ये दासाः	33
27.	वाग्भूषणम्	केयूराः न विभूषयन्ति पुरुषं	34
28.	विनम्रता	भवन्ति नम्रास्तरवः	36
29.	विश्वासः	न देवो विद्यते काष्ठे	37
30.	वैज्ञानिकदृष्टि	पुराणमित्येव न साधु सर्वं	38

© NCERT not to be republished

31.	शिष्टाचारः	प्रियं वा यदि वा द्वेष्यं	39
32.	सज्जनः	कटु क्वणन्तो मलदायकाः	40
		मृद्घटवत् सुखभेद्यो	41
33.	सत्संगति	कीटोऽपि सुमनः	42
		जाड्यं धियो हरति सिंचति	43
34.	सदाचारः	क्षान्तिश्चेत् कवचेन	44
		वह्निस्तस्य जलायते जलनिधिः	46
35.	संतोषः	सन्तोषामृततृप्तानां	47
		सर्पाः पिबन्ति पवनं न	48
36.	सत्य-निष्ठा	हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्य	49
37.	सर्व-समभावः	समानी व आकूतिः समाना	50
38.	स्वाभिमानः	तावदाश्रीयते लक्ष्म्या	51
	श्लोकानुक्रमणी	(अकारादि क्रम से)	

© NCERT not to be republished

1. आत्म-विश्वासः

विस्मयः सर्वथा हेयः
प्रत्यूहः सर्वकर्मणाम्।
तस्माद् विस्मयमुत्सृज्य
साध्ये सिद्धिर्विधीयताम्॥1॥

(सुभाषितरत्नभाण्डागारम् 155.95)

(हितोपदेश 2.15)

अनिश्चय का सर्वथा परित्याग करना चाहिए क्योंकि यह सभी कर्मों में व्यवधान स्वरूप होता है। इसलिए अनिश्चय को छोड़कर लक्ष्य की सिद्धि करनी चाहिए।

Indecision should always by abandoned, for it is an obstruction to all actions. Therefore, giving up indecision, one should accomplish his objectives.

© NCERT not to be republished

2. आत्म सम्मानः

यज्जीव्यते क्षणमपि प्रथितं मनुष्यैः
विज्ञानशौर्यविभवार्यगुणैः समेतम्।
तन्नाम जीवितमिह प्रवदन्ति तज्ज्ञाः
काकोऽपि जीवति चिराय बलिंच भुङ्क्ते॥2॥

(पंचतंत्रम्, मित्रभेदः, 24)

मनुष्यों के द्वारा ज्ञान, शूरता, वैभव तथा उच्च गुणों से युक्त जो जीवन क्षणभर के लिए भी कीर्तिपूर्वक जिया जाता है, इस लोक में तत्त्वज्ञानी लोग उसी को वास्तविक जीवन कहते हैं। वैसे तो कौवा भी बलि का भक्षण करते हुए चिरकाल तक जीवित रहता है।

The seers in this world deem only that life worth-living which is endowed with knowledge, bravery, wealth and virtues and praised by the people even though it is lived for a short period. Otherwise, even a crow lives long by eating offering (of others).

© NCERT not to be republished

मनस्विनो न मन्यन्ते

परतः प्राप्य जीवनम्।

बलिभुग्भ्यो न काकेभ्यः

स्पृहयन्ति हि कोकिलाः॥3॥

(सुभाषितरत्नभाण्डागारम् 83/2)

मनस्वी लोग दूसरों से जीवन पाकर जीना पसन्द नहीं करते।
कोयल बलि खाने वाले कौओं से अंश नहीं चाहती।

The high souled people do not like to live the life which is dependent upon others. As the cuckoos do not desire to get any thing from the offerings being enjoyed by the crows.

© NCERT not to be republished

3. आध्यात्मिकता

ईशावास्यमिदं सर्वं
यत्किच जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुंजीथा मा
गृधःकस्यस्विद्धनम्॥4॥

(शुक्लयजुर्वेदः, 40/1)

इस संसार में विद्यमान चराचर सभी वस्तुएँ ईश्वर से व्याप्त हैं। अतः उनका त्यागपूर्वक उपभोग करो। किसी के भी धन के प्रति लोभ मत करो।

Whatever animate or inanimate, exists in this world, is pervaded by the almighty. Therefore, enjoy only with the spirit of remunciation and do not desire the wealth of others.

© NCERT not to be republished

4. उत्तमजनः

घृष्टं घृष्टं पुनरपि पुनश्चन्दनं चारुगन्धं
छिन्नं छिन्नं पुनरपि पुनः स्वादु चैवेक्षुदण्डम्।
दग्धं दग्धं पुनरपि पुनः कांचनं कान्तवर्णं
न प्राणान्ते प्रकृतिविकृतिर्जायते चोत्तमानाम्॥5॥

(सुभाषितरत्नभाण्डागारम्/53/229)

बार-बार घिसने पर चन्दन अधिक सुगंधि प्रदान करता है। बार-बार काटने पर गन्ना अधिक से अधिक मीठा हो जाता है। बार-बार तपाने पर सोना अधिक चमक जाता है। उत्तम जनों के स्वभाव में प्राण जाने का संकट आने पर भी किसी प्रकार का विकार नहीं आता।

Sandalwood gives more perfume when rubbed again and again, the sugarcane becomes sweeter and sweeter when cut again and again, Gold glitters more and more when it is repeatedly heated. The nature of the great is never defiled even in the face of death.

© NCERT not to be republished

5. उत्साहः

विजेतव्या लंका चरणतरणीयो जलनिधिः
विपक्षः पौलस्यो रणभुवि सहायाश्च कपयः।
पदातिर्मर्त्योऽसौ सकलमवधीद् राक्षसकुलं
क्रियासिद्धिः सत्त्वे भवति महतां नोपकरणे॥6॥

(भोजप्रबन्धः, 170)

लंका को जीतना था, समुद्र को पैदल ही पार करना था, रावण जैसा शत्रु सामने था, रणभूमि में बन्दर ही सहायक थे, फिर भी मानवरूप में अवतीर्ण राम ने पैदल ही युद्धभूमि में संपूर्ण राक्षसकुल का विनाश कर दिया। महापुरुषों के साहस पर ही उनकी क्रिया की सफलता आश्रित होती है, साधनों पर नहीं।

Lanka had to be conquered, the ocean was to be crossed over on foot, Ravan was the enemy, the monkeys were the associated in the battle field. Yet the pedestrain Ram embodied as mortal killed

© NCERT not to be republished

the entire clan of demons in the battle. The success of the great men depend on their fortitude and not on their means.

© NCERT not to be republished

6. उदारता

भुक्तं स्वादुफलं कृतं च
शयनं शारवाग्रजैः पल्लवैः
त्वच्छाया परिशीतलं सुसलिलं
पीतं व्यपेतश्रमैः।
विश्रान्ताः सुचिरं परं
सुमनसः प्रीतिः किमत्रोच्यते
त्वं सन्मार्गतरुर्वयं च पथिकाः
यामः पुनर्दर्शनम्॥7॥

(सुभाषितरत्नभाण्डागारम् 247/20)

(किसी सन्मार्ग-प्रदर्शक पुरुष के सन्दर्भ में यह अन्योक्ति है) हमारे द्वारा स्वादिष्ट फल खाए गए। शाखाओं पर उत्पन्न पत्तों की छाया में शयन किया गया। थकावट रहित होकर हमारे द्वारा तुम्हारी छाया में शीतल जल पिया गया। बहुत देर तक विश्राम किया गया।

© NCERT not to be republished

तुम्हारे सुन्दर हृदय की प्रीति के विषय में क्या कहा जाए। तुम सन्मार्ग के वृक्ष हो और हम पथिक हैं। तुम्हारा फिर दर्शन हो। (इस कामना से) हम जा रहे हैं।

We have eaten tasty fruits, we have slept on foliage of your branches, we have taken cold water after getting freshness under your cold breeze. We have taken rest for a long time. What to say about affection of your heart, you are the tree of the right path and we are travellers. With a hope to see you again, we are going

© NCERT not to be republished

7. उद्यमः

काष्ठादग्निर्जायते मथ्यमानात्
भूमिस्तोयं खन्यमाना ददाति।
सोत्साहानां नास्त्यसाध्यं नराणां
मार्गारब्धाः सर्वयत्नाः फलन्ति॥8॥

(प्रतिज्ञायौगन्धरायणम्, 1/4)

निरन्तर घिसी जाती हुई लकड़ी से अग्नि उत्पन्न होती है। (बार-बार) खोदी जाती हुई भूमि जल प्रदान करती है। उत्साही पुरुषों के लिए कुछ भी असाध्य नहीं है। उचित दिशा में प्रारम्भ किए गए समस्त प्रयत्न सफल होते हैं।

Repeated friction of wood produces fire, constant digging of earth gives water. There is nothing impossible for presevering persons. All the efforts started in right directions bear fruits.

© NCERT not to be republished

8. कर्तव्यपरायणता

कुर्वन्नेवेह कर्माणि

जिजीविषेच्छतं समाः।

एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति

न कर्म लिप्यते नरे॥9॥

(यजुर्वेदः, 40/2)

इस संसार में कर्म करते हुए ही मनुष्य को सौ वर्षों तक जीने की इच्छा करनी चाहिए। इस प्रकार तुझ (मनुष्य) में कर्म लिप्त नहीं होगा (तुम्हें कर्म नहीं बांधेगा)। इससे भिन्न कोई मार्ग नहीं है।

Performing one's duty one should desire to live for hundred years. There is no way out except this for you. Only this way action will not stick to you.

© NCERT not to be republished

9. कार्य-दक्षता

गुणवदगुणवद् वा कुर्वता कार्यजातं
परिणतिरवधार्या यत्नतः पण्डितेन।
अतिरभसकृतानां कर्मणामाविपत्तेः
भवति हृदयदाही शल्यतुल्यो विपाकः॥10॥

(नीतिशतकम्, 99)

बुद्धिमान् व्यक्ति को यत्नपूर्वक उचित अथवा अनुचित कार्य करते हुए उसके परिणाम को निश्चित रूप से जानना चाहिए। नहीं तो बहुत जल्दी में किए हुए कार्यों का फल मृत्युपर्यन्त मनुष्य को हृदय में गड़ी कील के समान निरन्तर संतप्त करता रहता है।

A wisemen should carefully think over the results of the right or the wrong action he is going to perform; otherwise the results of the deeds done in rashness would go on hearting till death like the shaft of an arrow (pierced in the heart).

© NCERT not to be republished

10. कुसंगति-परित्यागः

मन्दोऽप्यमन्दत्तामेति
संसर्गेण विपश्चितः।
पंकच्छिदः फलस्येव
निकषेणाविलं पयः॥11॥

(सुभाषितरत्नभाण्डागारम्, 90/10)

विद्वानों के साथ रहने से मंदबुद्धि व्यक्ति भी कुशाग्र-बुद्धि वाला बन जाता है, जिस प्रकार रीठे के सम्पर्क से दूषित जल भी स्वच्छ हो जाता है।

Even a dull becomes sharp by his association with the wise as turbid water is cleansed by its contact with the cleansing fruit (Reetha).

© NCERT not to be republished

11. क्षमा

यः समुत्पतितं क्रोधं,

क्षमयैव निरस्यति।

यथोरगस्त्वचं जीर्णां,

स वै पुरुष उच्यते॥12॥

(बाल्मीकिरामायणम्, 5/53/6)

वही मनुष्य वास्तव में 'पुरुष' कहलाता है, जो अपने उभरते हुए क्रोध को क्षमा के बल से उसी प्रकार त्याग देता है जिस प्रकार साँप पुरानी केंचुली को त्याग देता है।

That person, indeed, is called 'Man' who casts away his surging wrath by way of forgiveness just as a serpent casts away its decaying slough.

© NCERT not to be republished

12. चतुरता

व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवं,
भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः।
प्रविश्य हि घ्नन्ति शठास्तथाविधान्,
असंवृतांगान् निशिता इवेषवः॥13॥

(किरातार्जुनीयम्, 1/30)

जो मन्दबुद्धि (नृप आदि) लोग मायावी (छल-कपटी) लोगों के साथ छल-कपट नहीं करते उन्हें पराभव (पराजय) का सामना करना पड़ता है। दुष्ट लोग ऐसे असुरक्षित अंगों वाले सरल लोगों के बीच उसी प्रकार घुस कर नाश करते हैं, जिस प्रकार बाण कवचरहित व्यक्तियों के अंगों में प्रवेश कर उन्हें नष्ट कर देते हैं।

The dull who do not play trick with cunning and vicious people do face defeat. The wicked people mixing with such persons do harm to them as sharp arrows piercing the limbs of the people having uncovered bodies, destroy them.

© NCERT not to be republished

13. जागरूकता

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य
वरान् निबोधत।
क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया
दुर्ग पथस्तत्कवयो वदन्ति॥14॥

(कठोपनिषद्, 3/14)

उठो, जागो और श्रेष्ठ आचार्यों के पास जाकर ज्ञान प्राप्त करो। तत्त्वदर्शियों ने ज्ञान के मार्ग को धुरी की तीक्ष्ण और दुस्तर धार के समान दुर्गम कहा है।

Arise, awake and gain knowledge in he company of wisemen. The scholars consider the path of knowledge as sharp and uncrossable edge of the knife.

© NCERT not to be republished

14. तेजस्विता

अबन्ध्यकोपस्य विहन्तुरापदां
भवन्ति वश्याः स्वयमेव देहिनः।
अमर्षशून्येन जनस्य जन्तुना
न जातहार्देन न विद्विषादरः॥15॥

(किरातार्जुनीयम्, 1/33)

सार्थक क्रोध करने वाले और विपत्तियों को दूर करने वाले प्राणी के वश में लोग स्वतः ही आ जाते हैं। क्रोध रहित व्यक्ति की मित्रता से न किसी के मन में आदर भाव होता है और न ही उसकी शत्रुता से भय होता है।

The people by themselves come under the control of that man whose anger is not barren (i.e is not ineffetion) and who is able to remove the calamities. The people neither respect the friendship nor fear the enemity of the one who is devoid of anger.

© NCERT not to be republished

15. दूरदर्शिता

ऋणशेषं चाग्निशेषं

शत्रुशेषं तथैव च।

व्याधिशेषं च निःशेषं

कृत्वा प्राज्ञो न सीदति॥16॥

(पंचतंत्रम्, 4.239)

जो बुद्धिमान व्यक्ति ऋण, अग्नि, शत्रु और रोग को समूल नष्ट कर देता है, वह कभी भी दुःखी नहीं होता।

The wiseman who completely puts to ends debt, fire, enemy and disease is never aggrieved thereafter.

© NCERT not to be republished

16. दृढ-संकल्पः

प्राभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः
प्रारभ्य विघ्नविहता विरमन्ति मध्याः।
विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमानाः
प्रारब्धमुत्तमजनाः न परित्यजन्ति॥17॥

(नीतिशतकम्, 27)

छोटे व्यक्ति विघ्न के भय से किसी कार्य का आरम्भ ही नहीं करते, मध्यम कोटि के व्यक्ति कार्य का आरम्भ करके विघ्न आने पर उससे विरत हो जाते हैं। उत्तम जन विघ्नों के द्वारा बार-बार प्रताड़ित होने पर भी आरम्भ किए गए कार्य को नहीं छोड़ते।

People of low calibre do not initiate any activity for the simple fear of obstacles, people of medium calibre leave the work midway when faced with impediments, people of high calibre, even though impeded by obstacles again and again never giveup the work once begin.

© NCERT not to be republished

17. धैर्यम्

त्याज्यं न धैर्यं विधुरेऽपि काले,
धैर्यात्कदाचित्स्थितिमाप्नुयात् सः।
जाते समुद्रेऽपि हि पोतभङ्गे,
सांयात्रिको वांछति तर्तुमेव॥18॥

(पंचतंत्रम्, मित्रभेदः, 216)

(मनुष्य को) कठिन परिस्थितियों में भी धैर्य नहीं छोड़ना चाहिए, क्योंकि सम्भव है धैर्य से वह पुनः पूर्व स्थिति को प्राप्त कर ले जैसे कि नाविक समुद्र में जलयान के टूट जाने पर भी समुद्र पार करना ही चाहता है।

A man should not give up his patience even in the adverse times, for it is possible he may regain his prior position because of patience, just as a sailor wants to cross over the sea even when his ship is broken down in the sea.

© NCERT not to be republished

कदर्थितस्यापि च धैर्यवृत्तेः

बुद्धेर्विनाशो न हि शङ्कनीयः।

अधः कृतस्यापि तनूनपातो,

नाधः शिखा याति कदाचिदेव॥19॥

(हितोपदेशः, सुहृद्भेदः, 68)

आपत्तियों से घिर जाने पर भी धैर्यशाली व्यक्ति की बुद्धि के विनाश की आशंका नहीं करनी चाहिए। आग को नीचे की ओर कर देने पर भी उसकी लपटें कभी भी नीचे नहीं जातीं।

A man of fortitude though surrounded by a lot of difficulties, must not be suspected of loss of intellect. The flames of fire, though overturned, never go downwards.

© NCERT not to be republished

18. परोपकारः

एके सत्पुरुषाः परार्थघटकाः स्वार्थं परित्यज्य ये,
सामान्यास्तु परार्थमुद्यमभृतः स्वार्थाविरोधेन ये।
तेऽमी मानुषराक्षसाः परहितं स्वार्थाय निघ्नन्ति ये,
ये निघ्नन्ति निरर्थकं परहितं ते के न जानीमहे॥20॥

(सुभाषितरत्नभाण्डागारम्, 64.266)

एक वे सज्जन पुरुष हैं जो स्वार्थ की उपेक्षा करके परोपकार करते हैं। दूसरे वे सामान्य जन हैं जो स्वार्थ को त्यागे बिना परोपकार के लिए प्रयास करते रहते हैं। तीसरे वे नीच मनुष्य हैं जो स्वार्थ के लिए दूसरों के हित को नष्ट करते हैं। किन्तु जो व्यर्थ ही दूसरों के हित की हानि करते है। वे न जाने किस कोटि में आते हैं।

There are saintly people who ignore their own interests and do good to others. There are ordinary people who put in efforts for the good of others without sacrificing their own. There is no doubt,

© NCERT not to be republished

devilish people who ruin the interests of others for the sake of their own but it is not known, to what category these people belong who ruin interest of others without any purpose.

अहो एषां वरं जन्म

सर्वप्राण्युपजीवनम्।

धन्या महीरुहा येभ्यो

निराशा यान्ति नार्थिनः॥21॥

(श्रीमद्भागवतपुराणम्, 22/23)

अहो! जन्म तो इन्हीं वृक्षों का श्रेष्ठ है क्योंकि ये सब प्राणियों के उपजीव्य हैं। वे वृक्ष धन्य हैं जिनके पास आकर याचक निराश नहीं लौटते हैं।

The life of the trees is excellent, because they support all living beings. Blessed are the trees from whom no beggars goes back disappointed.

© NCERT not to be republished

पत्र-पुष्प-फलच्छाया-मूलवल्कलदारूभिः।

गन्ध-निर्यास-भस्मास्थितोक्मैः

कामान् वितन्वते॥22॥

(श्रीमद्भागवतपुराणम्, 22/34)

ये वृक्ष अपने पत्तों, फूलों, फलों, छाया, जड़, छाल, लकड़ी, गन्ध , गौंद, राख, गुठली और कोपलों से लोगों की इच्छाएँ पूर्ण करते हैं।

Trees fulfill the desire of the people by their leaves, flowers, fruits, shadesa, roots, barks, wood, fragrance, gum, ashes kernals and sprouts.

© NCERT not to be republished

19. प्रियवादिता

आकोपितोऽपि कुलजो न वदत्यवाच्यं
निष्पीडितो मधुरमेव वमेत् किलेक्षुः।
नीचो जनो गुणशतैरपि सेव्यमानो
हासेषु तद्वदति यत् कलहेषु वाच्यम्॥23॥

(सुभाषितावलिः, 44/277)

कुलीन व्यक्ति बार-बार क्रोध दिलाने पर भी न बोलने लायक वचन नहीं बोलता जैसे गन्ना बार-बार निचोड़ा जाने पर भी मिठास ही देता है। परन्तु नीच व्यक्ति सैकड़ों गुणों से युक्त व्यक्ति के द्वारा सेवा किए जाने पर भी हँसी-हँसी में वह बात कह देता है जो लड़ाई-झगड़े में कही जाती है।

A nobleman does nto speak evil words even though enraged just as sugarcane gives out sweet juice, even when crushed again and again. On the other hand, a mean person even if served with hundreds of virtues utters in joke what is generally spoken during quarrels.

© NCERT not to be republished

20. मद्य-निषेधः

धृतिं लज्जां च बुद्धिं च
पानं पीतं प्रणाशयेत्।
तस्मान्नराः संभवन्ति
निर्लज्जाः निरपत्रपाः॥24॥

(महाभारत अ./145)

पी हुई मदिरा (मनुष्य के) धैर्य, लज्जा और बुद्धि को नष्ट कर देती है। उससे मनुष्य निर्लज्ज और बेहया हो जाते हैं।

The wine when drunk spoils the firmness modesty and wisdom. Hence, the people become shameless and immodest.

© NCERT not to be republished

21. मनस्विता

को वीरस्य मनस्विनः स्वविषयः को वा विदेशस्तथा,
यं देशं श्रयते तमेव कुरुते बाहुप्रतापार्जितम्।
यद् द्रंष्ट्रानखलाङ्गुलप्रहरणः सिंहो वनं गाहते,
तस्मिन्नेव हतद्विपेन्द्ररुधिरैस्तृष्णां छिनत्त्यात्मनः॥25॥

(हितोपदेशः, मित्रलाभः, 172)

मनस्वी वीर के लिए स्वदेश क्या और विदेश क्या? जिस देश में वह रहता है, उसी को बाहुबल से अर्जित कर लेता है। दाढ़, नाखून तथा पूँछ रूपी शस्त्र वाला सिंह जिस वन में रहता है, उसी में गजराज को मार कर उसके रक्त से अपनी प्यास को बुझाता है।

To a high souled brave person, what is his native country or what is a foreign country to him. What place he resort to the same he acquires by the might of his arms, just as whichever forest a lion lives armed with jaws, nails and tail he quenches his thirst with blood of mighty elephant he kills.

© NCERT not to be republished

22. महापुरुषः

तृणानि नोन्मूलयति प्रभंजनो,

मृदूनि नीचैः प्रणतानि सर्वतः।

स्वभाव एवोन्नतचेतसामयं,

महान् महत्स्वेव करोति विक्रमम्॥26॥

(पंचतंत्रम्, मित्रभेदः, 133)

पूर्ण रूप से झुकी हुई कोमल घास को आँधी नहीं उखाड़ती। उदार चित्त वाले व्यक्तियों का यह स्वभाव ही है कि महान् व्यक्ति पर ही अपना पराक्रम दिखाता है।

The storm never uproots the tender and lowly grown grass. It is the nature of the great men. A great man shows his valour only against the great.

© NCERT not to be republished

23. मातृभूमिः

यस्यां वृक्षा वानस्पत्या ध्रुवास्तिष्ठन्ति विश्वहाः।

पृथिवीं विश्वधायसं धृतामच्छावदामसि॥27॥

जिस मातृभूमि पर वृक्ष तथा समस्त वनस्पतियाँ स्थित हैं तथा सभी स्थिर होकर रहते हैं, उस विश्वम्भरा पृथ्वी के गुण–गौरव का हम गान करते हैं।

We sing the glory of that motherland of ours on which always exist firmly the trees and vanaspatis and all other creatures.

वनस्पतियाँ वे वृक्ष हैं जिन्हें फैलने पर काटा नहीं जाता।

© NCERT not to be republished

यस्यां समुद्र उत सिन्धुरापो

यस्यामन्नं कृष्टयः संबभूवुः।

यस्यामिदं जिन्वति प्राणदेजत्

सा नो भूमिः पूर्वपेये दधातु॥28॥

(अथर्ववेदः 12/1/3)

जिस भूमि पर समुद्र है, नदियाँ हैं, जल है, खेती है, अन्न है, जिस पर जगत् सांस लेता है, चलता-फिरता है, वही (मातृभूमि) हमें प्रथम पेय प्रदान करें।

May our motherland give us the first drink on which there is ocean, there is river, water, agriculture, food grains and on which all the living beings breath and move about.

© NCERT not to be republished

24. मित्रता

आरम्भगुर्वी क्षयिणी क्रमेण
लघ्वी पुरा वृद्धिमती च पश्चात्।
दिनस्य पूर्वार्धपरार्धभिन्ना
छायेव मैत्री खलसज्जनानाम्॥29॥

(नीतिशतकम्/60)

दुष्ट और सज्जनों की मित्रता दिन के पूर्वार्ध और परार्ध की छाया के समान भिन्न होती है। (दुष्टों की मित्रता) प्रारम्भ में अधिक और बाद में क्रमशः क्षीण होती जाती है जबकि सज्जनों की मित्रता प्रारम्भ में कम और बाद में बढ़ती जाती है।

The friendship of the wicked and the noble is like the shadow in the forenoon and the afternoon. The former is long in the beginning but decreases afterwards whereas the latter is short in the beginning but becomes long afterwards.

© NCERT not to be republished

परोऽपि हितवान् बन्धुः बन्धुरप्यहितः परः।

अहिता देहजो व्याधिः हितमारण्यमौषधम्॥30॥

अपना हित करने वाला पराया व्यक्ति भी अपना बन्धु होता है और अहित करने वाला बन्धु भी पराया होता है जैसे अपने शरीर में ही उत्पन्न बीमारी अहितकारी होती है और जंगल में उत्पन्न औषधि (जड़ी-बूटी) हितकारी होती है।

Even if a stranger, if beneficials is (our) real kinsman and a kinsman, if inimical (hostile) is indeed a stronger just as a disease born in one's own body is harmful whereas herbs grown in a forest is beneficial.

© NCERT not to be republished

25. लोभ-परित्यागः

आदाने कुरुते बुद्धिं
न दास्यामीत्युवाच यः।
स लोभपाशं प्रभ्रष्टम्
आत्मनि प्रतिमुञ्चति॥31॥

(जातकमाला शिविजातकम्, 20)

जो वयक्ति केवल दान लेने का विचार करता है और नहीं दूँगा ऐसा कहता है, वह तो स्वयं ही लोभ के बन्धन को अपने ऊपर डाल लेता है।

The one, who thinks of only taking donations and says, 'I will not give' cast the fallen noose of greed on one's ownself.

© NCERT not to be republished

26. लोकप्रियता

आशाया ये दासाः

ते दासाः सर्वलोकस्य।

आशा येषां दासी

तेषां दासायते लोकः॥32॥

(सुभाषितरत्नभाण्डागारम्, 79/28)

जो व्यक्ति (आशा) के दास हैं, वे सम्पूर्ण संसार के दास बने रहते हैं। जो इच्छाओं (आशा) को अपनी दासी बना लेते हैं, सारा संसार उनका दास बन जाता है।

Those who are the slaves of desires are the slaves of the whole world, but those who enslave the desires make the entire world their slave.

© NCERT not to be republished

27. वाग्भूषणम्

केयूराः न विभूषयन्ति पुरुषं हाराः न चन्द्रोज्ज्वलारूः,
न स्नानं न विलेपनं न कुसुम नालङ्कृताः मूर्धजाः।
वाण्येका समलङ्करोति पुरुष या संस्कृता धार्यते।
क्षीयन्ते खलु भूषणानि सततं वाग्भूषणं
भूषणम्॥33॥

(नीतिशतकम्, 19)

(सोने के) बावजूद मनुष्य को शोभित नहीं करते। इसी तरह चन्द्रमा के समान उज्ज्वल हार, न स्नान, न सुगन्धित लेप, न पुष्प और न सजे हुए केश ही पुरुष को सुशोभित करते है। अन्य सभी प्रकार के आभूषण नश्वर हैं। वस्तुतः वाणी ही मनुष्य का आभूषण है।

The (golden) armlets do not adorn the person nor the moonlike bright necklace nor the bath nor the perfumed paste, nor the flower and nor the well dressed locks of hairs adorn the man. It is only the refined speech which adorn the man. All other ornaments are perishable, the ornament of speech is indeed, the real ornament.

© NCERT not to be republished

28. विनम्रता

भवन्ति नम्रास्तरवः फलागमैः
नवाम्बुभिर्भूरिविलम्बिनो घनाः।
अनुद्धताः सत्पुरुषाः समृद्धिभिः
स्वभाव एवैष परोपकारिणाम्॥34॥

(अभिज्ञानशाकुन्तलम्, 5/12)

फल आने से पेड़ झुक जाते हैं, नए जल धारण करने से बादल बहुत नीचे आ जाते हैं। इसी तरह सज्जन पुरुष सम्पत्तियों से युक्त होकर भी निरभिमान (विनम्र) रहते हैं। परोपकारी जनों का यही स्वभाव है।

The trees bend down when they bear fruits, the clouds come down when they have new (rain) water, the virtuous people are humble enen in prosperity. It is the very nature of the benevolent.

© NCERT not to be republished

29. विश्वासः

न देवो विद्यते काष्ठे,

न पाषाणे न मृण्मये।

भावे हि विद्यते देवः,

तस्माद् भावो हि कारणम्॥35॥

(हितोपदेशः, 314)

देवता काष्ठ में नहीं है, न ही वह पत्थर में है और न ही मिट्टी की मूर्ति में है, देवता तो निस्सन्देह अपनी भावना (विश्वास)में रहता है। इसलिए भावना ही (देवसिद्धि में) मुख्य कारण है।

The deity resides neither in the idol of wood or stone or clay. He is only in faith. Therefore, the faith is the supreme cause (in the existence of the deity).

© NCERT not to be republished

30. वैज्ञानिकदृष्टिः

पुराणमित्येव न साधु सर्वं,
न चापि काव्यं नवमित्यवद्यम्।
सन्तः परीक्ष्यान्यतरद् भजन्ते,
मूढः परप्रत्ययनेयबुद्धिः॥36॥

(मालविकाग्निमित्रम् 1/2)

जो कुछ प्राचीन है वह सब श्रेष्ठ है और जो कुछ नये काव्यों में वर्णित है वे सब निन्दनीय है। सज्जन पुरुष तो सोच विचार कर उस पर आचरण करते हैं, किन्तु मूर्ख लोगों की बुद्धि दूसरों के विचारों पर आश्रित रहती है।

All, that is old is not always good nor whatever is new is always fit to be condemned. But the good people act after due examination of facts where as ignorant people's ideas are dependent on others thoughts.

© NCERT not to be republished

31. शिष्टाचारः

प्रियं वा यदि वा द्वेष्यं शुभं वा यदि वाऽशुभम्।
अपृष्टोऽपि हितं ब्रूयात् यस्य नेच्छेत् पराभवम्॥37॥

(पंचतंत्रम्, मित्रभेदः, 262)

मनुष्य जिस व्यक्ति का अहित नहीं चाहता उसका हित बिना पूछे भी कह देना चाहिए, चाहे वह बात उसे अच्छी लगे चा बुरी लगे, शुभ लगे या अशुभ।

In the case of one, whose harm is not intended one should tell him his welfare whether it is pleasant or unpleasant even if not asked for.

© NCERT not to be republished

32. सज्जनः

कटु क्वणन्तो मलदायकाः खलाः
तुदन्त्यलं बन्धनशृंखला इव।
मनस्तु साधुध्वनिभिः पदे पदे
हरन्ति सन्तो मणिनूपुरा इव॥38॥

(कादम्बरी, कथामुखम्, 6)

बुराइयों को जन्म देने वाले दुष्ट व्यक्ति बेड़ियों के समान कटु शब्द कहते हुए अत्यधिक पीड़ा पहुँचाते रहते हैं। किन्तु श्रेष्ठ व्यक्ति अपने प्रत्येक शब्द की मधुर ध्वनि से मन को वैसे ही आकृष्ट करते रहते हैं जैसे पग-पग पर मणियुक्त नूपुर की ध्वनि।

The wicked people, speaking bitter words cause immense pain to others like the ratlling shackles. The noble ones attract the minds of others by their sweet words like the anklets studded with gems.

© NCERT not to be republished

मृद्घटवत् सुखभेद्यो,

दुःसन्धानश्च दुर्जनो भवति।

सुजनस्तु कनकघटवद्,

दुर्भेद्यश्चाश सन्धेयः॥39॥

(हितोपदेशः मित्रलाभः 93)

दुर्जन व्यक्ति मिट्टी के घड़े के समान होता है जिसे सरलता से तोड़ा जा सकता है, परंतु उनको जोड़ना कठिन होता है जबकि सज्जन सोने के घड़े के समान होता है जिसे तोड़ना कठिन होता है, परंतु सरलता से जोड़ा जा सकता है।

The wicked person is like an earthern Jar easy to break but difficult to join, whereas a noble person is like golden pot difficult to break but easy to join.

© NCERT not to be republished

33. सत्संगतिः

कीटोऽपि सुमनःसङ्गादारोहति सतां शिरः।

अश्माऽपि याति देवत्वं महद्भिः सुप्रतिष्ठितः॥40॥

(सुभाषितरत्नभाण्डागारम् 10/11)

पुष्प के सम्पर्क से कीड़ा भी सज्जनों के सिर पर पहुँच जाता है। महापुरुषों द्वारा स्थापित पत्थर भी देवता बन जाता है।

Owing to its association with a flower even an insect climbs over the head of virtuous people. Even a stone consecrated by greatmen; asumes the status of a deity.

© NCERT not to be republished

जाड्यं धियो हरति सिंचति वाचि सत्यं
मानोन्नतिं दिशति पापमपाकरोति।,
चेतः प्रसादयति दिक्षु तनोति कीर्तिं,
सत्संगतिः कथय किं न करोति पुंसाम्॥41॥

(नीतिशतकम्, 24)

सज्जनों की संगति बुद्धि की जड़ता को समाप्त कर देती है, वाणी में सत्यता लाती है, स्वाभिमान को उन्नत करती है, पाप को दूर करती है, चित्त को प्रसन्न करती है तथा चारों दिशाओं में यश को फैलाती है। बताओ, सत्संगति मनुष्य का कौन-सा कल्याण नहीं करती?

The association with the saintly people removes the dullness of the intellect; brings forth truthfulness in the speech, provides one with selfrespect and advancement, dispels one's sins, please the heart and spread one's glory in all directions. Tells, what good does the company of the noble men not do to the people?

© NCERT not to be republished

34. सदाचारः

क्षान्तिश्चेत् कवचेन किं,
किमरिभिः क्रोधोऽस्ति चेद्देहिनां,
ज्ञातिश्चेदनलेन किं,
यदि सुहृद् दिव्यौषधैः किं फलम्।
किं सर्पैर्यदि दुर्जनाः,
किमु धनैर्विद्याऽनवद्या यदि,
व्रीडा चेत्किमु भूषणैः सुकविता
यद्यस्ति राज्येन किम्॥42॥

(नीतिशतकम् 22)

यदि किसी के पास सहनशीलता है तो कवच की क्या आवश्यकता? यदि क्रोध है तो शत्रु से क्या? यदि (ईर्ष्यालु) बंधुजन विद्यमान है तो अग्नि से क्या? यदि मित्र है तो चमत्कारी औषधियों से क्या? यदि दुष्ट लोग हैं तो साँपों से क्या? यदि शुद्ध विद्या है तो धन से

© NCERT not to be republished

क्या? यदि लज्जा है तो आभूषण से क्या? यदि काव्यप्रतिभा है तो राज्य से क्या?

A moderate (Tolerent) person does not need an armour. An angry man needs no foes. One having wicked relations needs no fire. A man having friends does not need miraculous medicines. One surrounded by the wicked people need not have fear from the serpents. A man with pure learning needs no need ornaments and one possessing peotic genius needs no kingdom.

© NCERT not to be republished

वह्निस्तस्य जलायते जलनिधिः कुल्यायते तत्क्षणात्
मेरुः स्वल्पशिलायते मृगपतिः सद्यः कुरङ्गायते।
व्यालो माल्यगुणायते विषरसःपीयूषवर्षायते,
यस्याङ्गेऽखिललोकवल्लभतमं
शीलं समुन्मीलति।।43।।

(नीतिशतकम्/108)

जिस के शरीर में सभी लोकों का अतिप्रिय शील विद्यमान है उसके सम्मुख आग जल के समान (शीतल) हो जाती है, समुद्र छोटी नहर के समान (तैरने योग्य) हो जाता है, सुमेरु पर्वत साधारण शिला के समान (चढ़ने योग्य) हो जाता है, सिंह हरिण के समान (भीरू) हो जाता है, साँप माला के समान (धारण करने योग्य) हो जाता है और विष भी अमृत की वर्षा के समान (ग्राह्य) हो जाता है।

For a person in whose personality resides the virtuous conduct, dearest to the entire world, even fire immediately serves as water, ocean as a canal; Sumeru mountain as a small piece of rock; lion as a deer; Serpent as a garland and poison as nectar.

© NCERT not to be republished

35. संतोष

सन्तोषामृततृप्तानां यत्सुखं शान्तचेतसाम्।

कुतस्तद् धनलुब्धानामितश्चेतश्च धावताम्।।44।।

(सुभाषितरत्नभाण्डागारम्, 78/1)

संतोष रूपी अमृत से तृप्त तथा शान्तचित्त लोगों को जो सुख मिलता है, वह इधर-उधर भटकने वाले धन के लोभियों को कहाँ मिल सकता है।

The happiness, which people with undisturbed mind and satisfied with the nector of contentment, get cannot be enjoyed by those who are greedy of wealth and are wandering here and there.

© NCERT not to be republished

सर्पाः पिबन्ति पवनं न च दुर्बलास्ते,

शुष्कैस्तृणैर्वनगजा बलिनो भवन्ति।

कन्दैः फलैर्मुनिवरा क्षपयन्ति कालं,

सन्तोष एव पुरुषस्य परं निधानम्॥45॥

(पंचतंत्रम्, मित्रसंप्राप्तिः, 159)

साँप केवल हवा पीते हैं तथापि दुर्बल नहीं होते। जंगली हाथी केवल सूखी घास खाकर शक्तिशाली रहते हैं। श्रेष्ठ मुनिगण केवल कन्दमूल तथा फल से जीवन-निर्वाह करते हैं। वस्तुतः सन्तोष ही पुरुष का परम धन है।

Serpents take only the air but they are not weak the wild elephants are strong enough by eating dry grass. The saints live on roots and fruits. Contentment is indeed , the greatest asset of man.

© NCERT not to be republished

36. सत्य-निष्ठा

हिरण्मयेन पात्रेण,

सत्यस्यापिहितं पुखम्।

तत्त्वं पूषन्नपावृणु,

सत्यधर्माय दृष्टये।।46।।

(ईशावास्योपनिषद्, 16)

सत्य का मुख स्वर्णमय पात्र से ढका रहता है, सर्वपोषक सूर्यदेव! उस सत्य के तत्त्व के दर्शन के लिए तुम उस ढक्कन को हटा दो।

The face of truth is covered with a golden lid. O the sun, the nourisher of all, remove that lid so that we may have the vision of that truth.

© NCERT not to be republished

37. सर्व-समभावः

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।

समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति॥47॥

(ऋग्वेद, 10/1/4)

तुम सबका अभिप्राय समान हो, तुम्हारा हृदय समान हो, तुम्हारा मन समान हो जिससे तुम में मेल-मिलाप (सहयोग) बना रहे।

May your thoughts be directed towards a common goal; your hearts be the same, similar may be your minds so that your companionship may be established.

© NCERT not to be republished

38. स्वाभिमानः

तावदाश्रीयते लक्ष्म्या,

तावदस्य स्थिरं यशः।

पुरुषस्तावदेवासी,

यावन्मानान्न हीयते।।48।।

(किरातार्जुनीयम्,11/61)

वयक्ति तभी तक लक्ष्मीवान् रहता है, तभी तक उसकी कीर्ति स्थिर है और वह तभी तक (वास्तव में) पुरुष है, जब तक कि वह सम्मान से वंचित नहीं होता।

A man is considered wealthy, famous and a 'Man' in true sense till he is not deprived of his self respect.

© NCERT not to be republished

श्लोकानुक्रमणी

अवन्ध्यकोपस्य विहन्तुरापदां	16
अहो एषां वरं जन्म	22
आकोपितोऽपि कुलजो	24
आदाने कुरुते बुद्धिं	32
आरम्भगुर्वी क्षयिणी क्रमेण	30
आशाया ये दासाः	33
ईशावास्यमिदं सर्वं	4
उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्	15
ऋणशेषं चाग्निशेषं	17
एके सत्पुरुषाः परार्थघटकाः	21
कटु क्वणन्तो मलदायकाः	40
कदर्थितस्यापि च धैर्यवृत्तेः	20
काष्ठादग्निर्जायते	9
कीटोऽपि सुमनः सङ्गादारोहति	42
कुर्वन्नेवेह कर्माणि	10
केयूराः न विभूषयन्ति पुरुषं	34
को वीरस्य मनस्विनः स्वविषयः	26
क्षान्तिश्चेत् कवचेन किं	44

© NCERT not to be republished

गुणवदगुणवद् वा कुर्वता	11
जाड्यं धियो हरति सिंचति	43
तावदाश्रीयते लक्ष्म्या	51
तृणानि नोन्मूलयति	27
त्याज्यं न धैर्यं विधुरेऽपि	19
धृतिं लज्जां च बुद्धिं च	25
घृष्टं घृष्टं पुनरपि	5
न देवो विद्यते काष्ठे	37
परोऽपि हितवान बन्धुः	31
पुराणमित्येव	38
प्रारभ्यते न खलु विघ्न भयेन	18
पत्र-पुष्प-फलच्छाया-मूल	23
प्रियं वा यदि वा द्वेष्यं	39
भवन्ति नम्रास्तरवः	36
भुक्तं स्वादुफलं कृतं च	7
मनस्विनो न मन्यन्ते	3
मन्दोऽप्यमन्दतामेति	12
मृदघटवत् सुखभेद्यो	41
यः समुत्पतितं क्रोधं	13
यज्जीव्यते क्षणीमपि	2

© NCERT not to be republished

यस्यां वृक्षा वानस्पत्या	28
यस्यां समुद्र उत सिन्धुरापो	29
विजेतव्या लंका चरणतरणीयो	6
वह्निस्तस्य जलायते	46
विस्मयः सर्वथा हेयः	1
व्रजन्ति ते मूढ़धियः	14
सन्तोषामृततृप्तानां	47
समानी व आकूतिः समाना	50
सर्पाः पिबन्ति पवनं	48
हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्य	49

© NCERT not to be republished